CURRENT GLOBAL REVIEWER
Issue X, Vol.VI , Aug. 2019 | UGC Approved Sr. No. 64310 | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 2.143

सीढ़ियों पर धूप में काव्य में नारी

प्रा.डॉ.महादेव चिंतामणी खोत
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, श्रीकृष्ण महाविद्यालय गुंजोटी ता.उमरगा. जि.उस्मानाबाद

-------- (13) ----------

भारतीय पुरुष प्रधान सांस्कृती में नारियों का परंपरा से शोषण किया जा रहा है। समाज में सबसे ज्यादा औरत पीडित रही है। पिढीयों से उसका शोषण किया जा रहा है। रघुवीर सहायजी ने भारतीय नारी की दयनीयता का चित्रण किया है। भारत देश में पुरुष प्रधान संस्कृति में नारी के लिए कोई महत्व नही है। नारी के सामने पुराने आदर्श पुरुष प्रधान संस्कृति को रखे है और उसे अत्याचार सहन कर आदर्श बनने का वर्णन किया है। सीढियों पर धूप में काव्य संग्रह में स्त्री संबंधित कविताओं ने उसकी पीडा को प्रदर्शित किया है। 'पढिए गीता' कविता में समाज के मध्यम वर्गीय नारी की दयनीय दशा का वर्णन किया है। विवाह के बाद नारी का कार्यक्षेत्र केवल घर की यहार दीवारों में सीमित रहता है। घर में भोजन बनाना, बच्चो की परवरिश करना घर की देखभाल करना इतने तक सीमित रहती है। अपनी सभी अभिलाषाओं को दबाकर वह कुढ-कुढ कर अपनी पीडा को भीतर ही भीतर रखकर ही अपना समुचा जीवन दबकर बीता देती है। अपनी सारी अभिलाषाओं का बलिदान करके जीवनयापन करती जीती है।

कवि रघुवीर सहाय 'सीढिया पर धूप मे' काव्यसंग्रह की पढिए गीता कविता में कहती है कि-

"पढिए गीता
बनिए सीता
फिर इन सबमे लगा पलीता
किसी मुर्ख की हो परिणीता
निज घरबार बसाईये
होय कँटीली
आँखे गीली
लकडी सीली तबियत ढीली
घर की सबसे बडी पतीली
भर कर भात परसाइए।

कवि ने नारी को बंधनो से मुक्त होने का संदेश देकर उसमें सामाजिक यथार्थ को दर्शन कराया है। नारी का जीवन समाज में दु:ख से भरा है।दूसरो का जीवन संजोने का वह कोशिश करती है और अपने जीवन प्रति नजरअंदाज करती है। इस संदर्भ में डॉ. शीला दानी 'पढिए गीता' कविता के बारे मे कहती है कि 'रघुवीर सहाय' अपनी जीवन की स्थिति और विडम्बनाओं की अपने रचना कौशल से जीवन बनाए रखने की कोशिश उनकी हमेश रही है यही कारण है कि उनकी कविताएँ साधारण होकर भी एक विशिष्ट अर्थ बोध कराती है।"

प्रस्तुत 'पढिए गीता' इस छोटीसी कविता में कवि ने भारतीय निम्न मध्यमवर्गीय नारी की पुरी जीवन कहानी कह दी है। भारतीय नारी के लिए कोई महान नही है है सिर्फ वह किसी की धर्म पत्नी बनकर भोजन पकाना और अपने पती का घर बसाना इसी काम की वह बनती है। इस संदर्भ में सुरेश शर्मा 'पढिए गीता' कविता के बारे में कहते है कि- "जीवन स्थितियों से संबंधित विडम्बनाओं को कविता में लाकर प्रेम को एक मानवीय

Scanned with OKEN Scanner

और रचनात्मक आयाम प्रदान करते है। इस पूँजीवादी व्यवथा में नारी (जिससे प्यार करते है) का विषय जीवन स्थितियों के बीच विडम्बनाओं का शिकार हो जाना नियति है। 'पढिए गीता' कविता में जिस तरह इस नियति को व्यंग के माध्यम से प्रस्तुत किया है।"

सहाय जी करुण स्वर के साथ कभी-कभी प्रेम कविताओं में जीवन के मुक्त और सहज स्वाभाविक हास्य भी सुनाई पडता है। नागेश्वर लाल इस बारे में कहते है- "रघुवीर सहाय तनाव के समय लिखने के बावजुद हॅस सकते है, यह उल्लेख्य बात है।"

सहायजी ने नारी पक्ष के लिए इन्साफ देने का काम किया है।समाज मे नारी की स्थिति पर 'लिखा प्रहार' इस कविता के माध्यम से किया है। नारी समाज के पुरुषों को मान सम्मान अर्पित करती है। पुरुष प्रधान समाज में नारी दया की पात्र बन जाती है। नारी को पुरुष की अर्धांगिनी के रुप में प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए। नारी को पुरुष के बराबर मानना चाहिए लेकिन यह बात समाज मे स्वीकार्य नही है। नारी कभी लक्ष्मी बनी कभी लोगोपर दया करनेवाी करुणावती थी लेकिन उन्होने अधिकार पाना छोडकर नारी दया की पात्र बनी। नारी की दशा हवालात में बंद कैदियों तरह हो गयी है। सिर्फ वह दया को ही अपना शरीर समर्पण करना चाहती है इसलिए रघुवीर सहाय "धिक मेरी व्यथ को" कविता मे लिखते है-

"लक्ष्मी करुणावती थी तुम, विलासीया मे
किंतु धिक मेरी व्यथ को
जो और अधिक दया ही माँगती रही
बन्दिनी नारी ही दया जो केवल तन का समर्पण है।"

रघुवीर सहाय 'नारी' कविता के माध्यम से कहना चाहते है कि पुरुष संस्कृति की ओर से नारी का शोषण किया जाता है वह नारी शरीर से भुखी है लेकिन इतनी भुखी होने के बाद भी वह मन से एकदम प्रसन्न रहती है। पुरुषों के अत्याचारों से वह इतनी दु:खित होते हुए भी सुख की कामना कर जीवनयापन करती है। कवि रघुवीर सहाय 'नारी' कविता में लिखते है-

'नारी बिचारी है
पुरुष की मारी है
मन से मुदित है
लपककर झपककर
अंत में चित है।"

डॉ. अनंत कीर्ति तिवारी नारी के बारे मे कहते है- "नारी शीर्षक कविता में कवि नारी को बेचारी तथा पुरुष के अत्याचारो से पीडित कहता है। कवि के अनुसार मध्यम वर्ग् की स्त्रियो में वह भाव दृष्टीगत होता है, जो नारी की विडंबना को रुपायित करता है।"

कवि रघुवीर सहाय जी ने औरतो की दशाओं का चित्रण अपने काव्य में किया है। कवि रघुवीर सहाय का मानना है कि पुरुष प्रधान संस्कृति में ओरतों के लिए कोई महत्व नही है। पुरुष प्रधान समाज की ओर से औरतो पर अत्याचार किए जाते है और औरत वह अत्याचार पीढियो से सहती आयी है। उस अत्याचार के विरुद्ध

Scanned with OKEN Scanner

वह मूक है। डॉ. कुसुम नेहरा 'नारी' कविता के बारे में कहती है कि- "नारी को पहले से ही सताया जाता रहा है। तभी उसका स्वरुप ऐसा बन गया है।जैसा कि कवि ने यहाँ पर वर्णन किया है।"

इस प्रकार रघुवीर सहाय जी ने "सीढियो पर धूप में" कविता संग्रह की 'पढिए गीता' 'नारी' 'तिखा प्रहार' इन कविताओ के माध्यम से नारी को दशा को वर्णन किया है। नारी पुरुष प्रधान संस्कृती में अपना खुद का विकास नही कर पायी है। सदियों से अत्याचार सहती आयी है और उस अत्याचारों का विरोध नही कर रही है।

संदर्भ:-

१. सीढियों पर धूप में - रघुवीर सहाय
२. रघुवीर सहाय का काव्य संवेदना और शिल्प – डॉ कुसुम नेहरा
३. रघुवीर सहाय की कावनुभूति और काव्यभाषा – डॉ. अनंतकीर्ति तिवारी
४. रघुवीर सहाय का कवि कर्म - सुरेश शर्मा
५. रघुवीर सहाय रचनाओं के बहाते एक स्मरण - मनोहर श्याम जोशी

Scanned with OKEN Scanner